यीशू कौन है?

अध्ययन एक

मसीहत से सम्बन्धित मेरी सबसे पुरानी यादों में था, लगभग नौ वर्ष की आयु में स्कूल जाना। जैसे मैं सैल्वशन आर्मी चर्च के पास से गुज़रा, दीवार पर टंगे एक पोसटर ने मेरा धयान अपनी ओर खींचा। उस पर लिखा था, "क्या तुम सचमुच जीवित हो?" मैंने सोचा, जो मैंने अब तक पढा था उसमें से यह अब तक का सबसे बेतुका कथन था। मैं जीवित हूँ तभी तो मैं इस बेवकूफ़ी भरी बात को पढ पा रहा हूँ। इसके लिए कोई व्याख्या नहीं थी और मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मसीही लोग सबसे अधिक नासमझ लोग हो सकते हैं। निश्चित तौर पर, जब मैं स्वयं मसीही बना, तो मैंने जाना कि जब कोई व्यक्ति मसीह के पास आता है तो वह एक अलग प्रकार के जीवन में प्रवेश करता है, मसीह में एक नया जीवन, जहाँ एक व्यक्ति “सचमुच जीवित” हो जाता है।

मसीहत के विरुद्ध मेरा पक्षपात पूर्ण रवैया मुझे बहुत सारे 'नए युग' की सामग्री और दूसरे धर्मों की खोज में से लेकर गया। अन्त में जिसने मुझे मसीहत की ओर देखने के लिए विवश किया वह हैल लिन्से नामक लेखक द्वारा लिखी गयी पुस्तक थी, जिसका नाम था, "The late Great Planet Earth" (स्वर्गीय महान गृह पृथ्वी) उसने कई सारे प्रमाण दिए कि यीशू जीवित और अच्छा था और बहुत सारी बाईबिल की भविष्यवाणियाँ जो उसके लौटने के विषय में लिखी गयी हैं पूरी हुईं और हो रहीं हैं। मुझे आपके बारे में नहीं पता लेकिन इससे पहले कि मैं अपना जीवन मसीह को देता, मुझे बहुत सारी जानकारी की आवश्यकता थी।
मेरे जीवन का क्या अर्थ है, इस खोज की शुरुआत मैं गंभीरता से करने लगा। मैं इस बात पर विशवास नहीं करता कि आप गणितज्ञ या वैज्ञानिक प्रमाण से मसीहत को साबित कर सकते हैं लेकिन इस बात के भारी प्रमाण हैं कि यदि इसे न्यायालय में पेश किया जाए तो कोई भी तर्क समझनेवाला व्यक्ती प्रमाणों तो तोलकर यह निर्णय दे देगा कि मसीहत सच्ची है। इस अध्ययन में मैं आपके विच्चारण के लिए मसिह के व्यक्तित्व के बारे में कुछ ऐतिहासिक प्रमाणो को जाँचना चाहूँगा और यह कि वह कौन था|

<u>सर्वप्रथम हम कैसे जानते है कि उसका अस्तित्व था?</u>

मुझे बताया गया है कि सम्यवादी रूसी शब्दकोष में यीशु को एक काल्पनिक जन के रूप में दिखाया गया है जिसका कभी अस्तित्व नही था। कोई भी गंभीर इतिहासकार आज इस विचारधारा को नहीं रख सकता। यीशु के अस्तित्व के बारे में बहुत सारे प्रमाण हैं। नए नियम से

प्रमाण, बल्कि गैर मसीही लेखों से भी। उद्धाराण के लिए, दोनो रोमी इतिहासकारों टैसीट्स (प्रत्यक्ष रूप से) और सुईटोनिअस (अप्रत्यक्ष रूप से) ने उसके विषय में लिखा है। फिर ३७ ईसवी में जन्मे यहूदी इतिहासकार फ़्लाविअस जोसेफ़स (स्पष्टतः एक गैर मसीही) यीशु और उसके चेलों का इस प्रकार से वर्णन करते हैं:

“अब इस समय के लगभग एक बुद्धिमान मनुष्य था, यीशु, यदि उसे मनुष्य कहना न्यायोचित हो क्योंकि वह भले कामों का करनेवाला था, ऐसे लोगों का शिक्षक जो सच/सत्य को आनन्द के साथ ग्रहण करते हैं। उसने अपनी ओर दोनों को खींच लिया - बहुत से यहूदी और बहुत से अन्यजातीय। वह ’मसीह’ था; और जब पिलातुस, ने हम में से मुख्य लोगों के सुझाव पर, उसे क्रूस पर दण्दित किया, जो उससे पहले प्रेम करते थे उन्होंने उसे छोडा नही, क्योंकी तीसरे दिन वह उन्हें फ़िर जीवित दिखई दिया, जैसे कि दिव्य भविश्यद्वक्ताओं ने यह सब और उससे संबंधित दस हज़ार और सुन्दर बातें पेहले ही बता दी थी; और मसीह जाति जो उसके नाम से बुलाई जाती है आज के समय में विलुप्त नहीं है”।[1]

हम कैसे जाने कि जो उन्होने लिखा वह बदला नही गया? क्या नए नियम के लेख विश्वसनीय हैं?

शायद कुछ लोग कहेंगे कि नया नियम काफ़ी समय पहले लिखा गया। हम कैसे जानें कि जो उन्होने लिखा वह सालों में नही बदला? इसका उत्तर शाब्दिक आलोचना के विज्ञान में छिपा है। इसका अर्थ है कि जितनी लिखित सामग्री या मनुस्मृतियाँ हमारे पास हैं और जितने समय के निकट यह लिखी गयी, उसके मूल होने में उतना ही कम सन्देह रह जाता है।

आईए हम नए नियम की तुलना, हमें दिये गए अन्य प्रचीन लेखों से करे। स्वर्गीय प्रो. एफ़ एफ़ ब्रूस (जो कि यूनीवर्सीटी ओफ़ मेन्चेसटर, इंग्लैण्ड में वचन पर टिप्पणी के राय्लंड्ज़ प्रोफ़ेसर थे) इस बात की ओर संकेत करते हैं कि सीज़र्ज़ गैलिक वार के लिये हमारे पास नौ या दस प्रतियाँ हैं और उन में से सबसे पुरानी कैसर के समय के लगभग नौ सौ साल बाद लिखी गई। लिवीज़ रोमी इतिहास के लिए हमारे पास बीस से अधिक प्रतियाँ नहीं हैं जिसमें से सबसे पुरानी लगभग ९०० ईसवी के आस-पास से आती है। जब हम नए नियम पर आते हैं तो हमरे पास बहुत सारी सामग्री है। नया नियम ४० और १०० ईसवी के बीच लिखा गया। हमारे पास सम्पूर्ण नए नियम

[1] Josepheus, Antiquities, XV 63f.

के लिए सर्वोत्तम मनुस्मृतियाँ हैं जो कि ३५० ईसवी के आस-पास से हैं (समय-सीमा केवल तीन सौ साल) पप्यरी पर लिखे नए नियम के अधिकांश लेख तीसरी शती से और यहून्ना के सुसमाचार का हिस्सा भी जो लगभग १३० ईसवी में लिखा है। लगभग पाँच हज़ार से अधिक यूनानी मनुस्मृतियाँ, दस हज़ार से ज़्यादा लातिन मनुस्मृतियाँ, और ९३०० अन्य मनुस्मृतियाँ साथ ही छतीस हज़ार से अधिक हवाले प्रचीन कलीसिया के अगुवों के लेखों में।

कर्य	**कब लिखी गई**	**प्रचीनतम प्रतियाँ**	**समय- अवधी (वर्षों में)**	**प्रतियों की संख्या**
हेरोडोट्स	४८८-४२८ ई० पू०	९०० ईसवी	१३००	८
थ्यूसीडाईड्स	c.४६०-४०० ई० पू०	c.९०० ईसवी	१३००	८
टैसीट्स	१०० ई० पू०	११०० ईसवी	१०००	२०
सीज़र्स गैलिक	५८-५० ई० पू०	९०० ईसवी	९५०	९-१०
युद्ध				
लिवि का रोमी इतिहास	५९ ई०पू० - १७ ईसवी	९०० ईसवी	९००	२०
नया नियम	४०-१०० ईसवी	१३० ईसवी	३०० सम्पूर्ण मनुस्मृतियाँ ३५० ईसवी	५,००० + यूनानी १०,००० लातीन ९३०० अन्य

इस क्षेत्र में एक अग्रणी विद्वान सर फ़्रेडरिक केनयन की बात को दोहराते हुए एफ़ एफ़ ब्रूस प्रमाण का सार देते हैं:

“मूल लेखों और प्राचीनतम प्रमाणों के अस्तित्व में होने की तिथियों के बीच कि अवधी बहुत कम या न के बराबर हो जाती है, और किसी भी सन्देह के लिए आखिरी आधार कि वचन हमारे पास अधिकांशातः वैसे ही पहुँचा जैसा लिखा गया, अब हट गया है। अतः यह मान लिया जाए कि नए नियम की पुस्तकें सच्ची और खरी हैं”।

तो हम प्रचीनतम मनुस्मृतियों से जानते हैं कि वह था, पर वह कौन है?

मर्टिन स्कोर्सिज़, एक फ़िल्म नेर्माता, ने एक बार अपमान जनक फ़िल्म बनाई जिसका नाम था "The last temptation of Christ" (मसीह की आखारी परीक्षा)। जब उनसे फ़िल्म बनाने का कारण पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि वह यह दिखाना चाहते थे कि यीशू सचमुच में एक इनसान था। फ़िर भी ज़्यादातर लोगों के मन में यह संदेह नहीं है। आज कुछ ही लोग संदेह करते हैं कि यीशू पूर्ण रूप से मानव था। उसके पास मानवीय शरीर था। कई बार वह थका हुआ और भूखा होता था। उसके पास मानवीय भवनायें थी। वह नाराज़ होता था, प्रेम करता था और वह शोकित भी होता था। उसके पास मानवीय अनुभव थे; उसकी परीक्षा ली गई, उसने सीखा, काम किया और उसने अपने माता-पिता की आज्ञा मानी। आज अधिकांश लोग यह कहते हैं कि येशू केवल एक मनुष्य था - एक महान धर्मगुरू। बिली कोनोली, एक हास्य कलाकार ने बहुत बड़ी बात की जब उसने कहा "मैं मसीहत में विश्वास नहीं कर सकता परन्तु मैं यह समझता हूँ कि यीशु एक बहुत अच्छा मनुष्य था"।

क्या प्रमाण है यह बताने के लिए कि येशू एक बहुत अच्छा मनुष्य या एक धार्मिक गुरू से बढ़कर था? उत्तर यह है कि इस विचार से सहमत होने के लिए कि वह था और परमेश्वर का विशेष पुत्र है, त्रिएकता का दूसरा व्यक्ति, बहुत सारे प्रमाण हैं।

उसने अपने विषय में क्या कहा?

कुछ लोग कहतें हैं, "यीशु ने कभी भी परमेश्वर होने का दावा नहीं किया।" वस्तव में यह सच है कि यीशु यह कहते हुए कि मैं परमेश्वर हूँ यहाँ वहाँ नहीं फिरा। फिर भी यदि उस ओर देखा जाए जो सब उसने सिखाया और दावा किया तो कोई संदेह नहीं है कि वह इस बात को जानता था कि वह एक मनुष्य था जिसकी पहचान परमेश्वर था।

१) स्वंय पर केन्द्रित शिक्षा

यीशु के बारे में एक दिल लुभानेवाली बात यह है कि उसकी बहुत सारी शिक्षायें स्वंय पर केन्द्रित थी। वह अकसर लोगों से कहता था, " यदि तुम परमश्वर के साथ सम्बंध चाहते हो तो तुम मेरे पास आओ। (देखें यहुन्ना १४:६ पृष्ठ १६२१) उसके साथ सम्बंध के द्वारा ही हम परमेश्वर से मिल पाते हैं। अपने जीवन के युवा सालों में मैं इस बात से जागृत था कि कोई चीज़ की कमी मेरे जीवन में है, यह इस प्रकार से था जैसे कि एक आन्तरिक खालीपन था जो भरे जाने की चाह रखता था। शायद आप स्वंय के आन्तरिक खालीपन से परिचित होंगे जिसकी

भरपाई आप वस्तुओं से करना चाहते हैं। २०वीं शताब्दी के अग्रणी मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस अन्दरूनी खालीपन को स्वीकार किया गया है। उन सबने इस बात को पेहचाना है कि हम सबके हृदय में एक गेहरा खालीपन, एक खोया हुआ भाग, बहुत बडी भूख है।
फ्रेउड ने कहा, "लोग प्रेम के भूखे हैं।"
जंग ने कहा, " लोग सुरक्षा के भूखे है।"
एड्लर ने कहा, "लोग महत्वता के भूखे है।"

यीशु ने कहा, "मैं जीवन की रोटी हूँ।" यदि तुम अपनी भूख की तृप्ति चाहते हो तो मेरे पास आओ। यदि तुम अन्धकार में चल रहे हो तो वह कहता है "मैं जगत की ज्योती हूँ।"

एक किशोर के रूप में मैं मृत्यु से बहुत डरता था शायद उस जोखिमभरे काम के कारण जो मैं कर रहा था। मैं इंग्लैण्ड के पूर्वी तट पर एक व्यावसायिक मछुवारे की तरह काम कर रहा था। कई बार मैंने अपने जालों में विस्फ़ोटक गोले पकड़े और मुझे उनका सामना करना पडता था और मैं उन्हे जहाज़ के फ़र्श पर लुड़कता हुआ पाता था। एक प्रश्न हमेशा मेरे सामने रहता था - यदी मैं मर गया तो किधर जाऊँगा? यदि तुम मृत्यु से भयभीत हो, यीशु कहता है, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। 26और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है? (यूहन्ना ११:२५-२६) यीशु की शिक्षा स्वंय पर केन्द्रित होने से मेरा यही अभिप्राय है। जीवन में खाली हिस्से की ओर उसने अपने आपको उत्तर के रुप में दर्शाया है।

कुछ लोग विभिन्न चीज़ों की लत में होते हैं - नशा, शराब, शरीरिक संबन्ध। यीशु ने कहा "यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे तो तुम सचमुच स्वतन्त्र हो जाओगे"। (यहुन्ना ८:३६) बहुत से लोग चिन्ता, घबराहट, भय और दोष से दबे हुए हैं। "यीशु ने कहा, हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा"। (मत्ती ११:२८) उसने कहा, "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ"।

उसने कहा कि उसे प्राप्त करना परमेश्वर को प्राप्त करना है (मत्ती १०:४०), उसका स्वागत करना परमेश्वर का स्वागत करना है (मरकुस ९:३७) और उसको देख लेना परमेश्वर को देख लेना है। (यहुन्ना १४:९)

एक बार एक बालक ने एक चित्र बनाया और उसकी माँ ने उससे पूछा कि वह क्या कर रहा है? बच्चे ने कहा, "मैं परमेश्वर की तस्वीर बना रहा हूँ"। माँ ने कहा, "मूर्ख मत बनो। तुम परमेश्वर

की तस्वीर नहीं बना सकते। कोई नहीं जानता कि ईश्वर कैसा दिखाई देता है। बच्चे ने उत्तर दिया, हाँ, जब तक मैं समाप्त करुँगा, वे जान जाएँगे। वास्तव में यीशु ने कहा, यदि तुम यह जानना चहते हो कि परमेश्वर कैसा दिखाई देता है तो मेरी ओर देखो।

२) अप्रत्यक्ष दावे

यीशु ने काफ़ी सारी बातें कहीं, जो कि, यद्ध्पि प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर होने का दावा नहीं करतीं लेकिन यह दिखाती हैं कि वह अपने आप को परमेश्वर के जैसे स्थान में सोचता था जैसे कि हम एक या दो उद्धारणों में देखेंगे। अपनी बिईबिल में निकालें (मरकुस २:३-१२)

<u>पाप क्षमा करने का अधिकार</u>

3 और लोग एक झोले के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठवाकर उसके पास ले आए। 4 परन्तु
जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न पंहुच सके, तो उन्होंने उस छत को जिस के नीचे वह था,
खोल दिया और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर झोले का मारा हुआ पड़ा था,
लटका दिया। 5 यीशु ने, उन का विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, तेरे
पाप क्षमा हुए। 6 तब कई एक शास्त्री जो वहां बैठे थे, अपने अपने मन में विचार करने लगे। 7
कि यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है, परमेश्वर को छोड़
और कौन पाप क्षमा कर सकता है? 8 यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया, कि वे अपने
अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उन से कहा, तुम अपने अपने मन में यह विचार क्यों
कर रहे हो? 9 सहज क्या है? क्या झोले के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह
कहना, कि उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर? 10 परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के
पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे हुए से कहा)।
11 मैं तुझ से कहता हूं; उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा। 12 और वह उठा, और
तुरन्त खाट उठाकर और सब के साम्हने से निकलकर चला गया, इस पर सब चकित हुए, और
परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, कि हम ने ऐसा कभी नहीं देखा॥ (मरकुस २:३-१२)

पाप क्षमा करने का दावा सचमुच चौंकानेवाला दावा है।

अपनी पुस्तक 'मीयर क्रिश्चेनिटी' में सी.एस. लूईस इस को अच्छे से समझाते हैं जब वह लिखते हैं,

"दावे का एक हिस्सा हम इसलिये देख भी नही पाते हैं क्योंकि हमने उसे अक्सर सुना है, और हम उसके महत्व को समझ ही नहीं पाते। मेरा आर्थ है पाप क्षमा करने का दावा: हर तरह के पाप। अब यदि बोलने वाला ईश्वर न हो तो यह बेहद मज़ाकिया होगा| हम सब समझ सकते हैं कि किसी प्रकार मनुष्य अपने प्रति की गई गलतियों को क्षमा करता है। तुम मेरे पैर पर चढ़ो और मैं तुम्हें क्षमा कर दूँ, तुम मेरे पैसे चुराओ और मैं तुम्हें क्षमा कर दूँ। पर हम उस मनुष्य का क्या करें जो स्वंय लूटा गया और स्वंय कुचला गया न हो जिसने इस बात की घोशणा की कि उसने तुम्हें दूसरे मनुष्यों के पैर पर चढ़ने के लिए और दूसरे मनुष्यों के पैसे चुराने के लिए क्षमा किया है। उसके आचरण को उदार रूप में अर्थहीन बेवकूफ़ी बताया जा सकता है। फिर भी, यीशु ने ऐसा किया। उसने लोगों को बताया कि उनके पाप क्षमा हुए और कभी भी उन लोगों से सलाह लेने के लिए नहीं ठहरा जिन्हें उनके पापों ने निस्सन्देह चोट पहुँचाई थी। वह बिना हिचकिचाहट ऐसा जताता था जैसे कि वही वह व्यक्ति है जिसने मुख्यतः हर गलतियों में चोट खाई है। यह बात तभी मायने रखती है यदि वह सचमुच ईश्वर था जिसके नियम तोडे गए थे और जिसका प्रेम हर पाप में से घायल हुआ। किसी और बोलनेवाले के मुहँ से जो ईश्वर नहीं है इन शब्दो से यह समझा जाता है कि यह मूर्खता और घमंड है जिसकी प्रतिस्पर्धा किसी और पात्र से नहीं की जा सकती।"

<u>संसार का न्यायी होने का दावा</u>

एक और असाधारण सा अप्रत्यक्ष दावा यह है कि एक दिन वह संसार का न्याय करेगा। (मत्ती २५:३१-३२) उसने कहा वह लौटेगा और स्वर्गीय महीमा में अपने सिंहासन पर बैठेगा। (पद ३१) सारी जातियाँ/ राष्ट्र उसके सम्मुख होंगे। वह उनका न्याय करेगा। कुछ लोग अनन्त जीवन और वह मीरास प्राप्त करेंगे जो सृष्टि की उत्पत्ति से उनके लिए तैयार की गई है लेकिन और लोग उससे अनन्तकाल के लिए अलग होने का दण्ड भोगेंगे।

३) प्रत्यक्ष दावे

'मसीह' होने का उसका प्रत्यक्ष दावा (यूहन्ना २०:२६-२९)

26 आठ दिन के बाद उस के चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उन के साथ था, और द्वार बन्द थे, तब
यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा, तुम्हें शान्ति मिले। 27 तब उस ने थोमा से कहा, अपनी उंगली
यहां लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु
विश्वासी हो। 28 यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर! 29 यीशु ने उस से कहा, तू ने तो
मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्हों ने बिना देखे विश्वास किया॥ (यूहन्ना २०:२६-२९)

यीशु ने यह नही कहा, अरे ज़रा ठहरो। तुम बहुत आगे निकल गए हो। उसने असल में यह कहा, तुम समझने में थोडा कम थे। उसने कहा शक करना छोडो और विशवास करो।(पद २७)

<u>परनेश्वर के पुत्र होने का उसका प्रत्यक्ष दावा</u>

61 परन्तु वह मौन साधे रहा, और कुछ उत्तर न दिया: महायाजक ने उस से फिर पूछा, क्या तू उस पर म
धन्य का पुत्र मसीह है? 62 यीशु ने कहा; हां मैं हूं: और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी
और बैठे, और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे। 63 तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा; अब
हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है 64 तुम ने यह निन्दा सुनी: तुम्हारी क्या राय है? उन सब ने कहा, वह
वध के योग्य है। (मरकुस १४:६१-६४)

यदि आपके पास केवल एक अवसर हो कि आप लोगों को वचन का एक भाग दिखा सके जहाँ पर यीशु द्वारा परमेश्वर होने का प्रत्यक्ष दावा हो तो वह है (यूहन्ना१०:३०-३३)

30 मैं और पिता एक हैं। 31 यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए। 32 इस पर यीशु ने उन
से कहा, कि मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिये
तुम मुझे पत्थरवाह करते हो? 33 यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि भले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह
नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा के कारण और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर
बनाता है। (यूहन्ना१०:३०-३३)

इस तरह के दावों को परखा जाना चहिए। विभिन्न प्रकार के लोग विभिन्न तरह के दावे करते हैं। केवल यह तथ्य कि कोई मनुष्य कोई जन होने का दावा करता है से यह तात्पर्य नहीं है कि वह दावा सच्चा है। कुछ लोग भ्रमित हो जाते हैं यह सोचकर कि वे नेपोलियन पोप या मसीहविरोधी हैं। हम लोगों के दावो को कैसे जाँच सकते हैं? यीशु ने दावा किया कि वह परमेश्वर का विशेष पुत्र है परमेश्वर देह में। हमारे पास तीन तार्किक संभावनायें हैं। पहली संभावना यह है की यदि दावे झूठे थे तो वह जानता था कि वे झूठे थे जिस दशा में वह एक धोखेबाज़ और दुष्ट है। या वह सचमुच जानता था जिस दशा में वह भ्रमित था। वास्तव में, वह पागल था। यह दूसरी संभावना है। तीसरी संभावना यह है कि वह दावे सच्चे थे।

सी.एस. लुईस इसको इस तरह से बताते है:
"एक मनुष्य जो केवल एक मनुष्य था और उस तरह से बातें करता जैसे यीशु करता था वह एक महान नैतिक शिक्षक नहीं हो सकता था। या तो वह बावला होगा, एक ऐसे व्यक्ति के समान जो सरफिरा है, या फिर वह नरक का शैतान होगा। आपको चुनाव करना है। या तो यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था और है या फिर एक पागल, या उससे बदतर --- लेकिन हम एक

कृपालू की तरह उसके महान शिक्षक होने का किसी प्रकार के, मूर्खतापूर्ण विचार को न रखें। उसने वह हम पर नहीं छोड़ा। उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था।"

जो उसने कहा उसको साबित करने के लिए क्या प्रमाण है?

१) उसकी शिक्षा - किसी भी जन के मुँह से निकली शिक्षाओं में से यीशु की शिक्षा को महानत्म शिक्षा के रूप में बड़े पैमाने पर स्वीकार किया गया है। "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख", "जैसा तुम चाहते हो कि तुम्हारे साथ किया जाए वैसा ही तुम दूसरों के साथ किया करो", "अपने शत्रुओं से प्यार करो", "दूसरा गाल फेर दो"। (मत्ती ५-७) थीयोलोजी के अमरीकी प्र० बर्नारड रम्म ने यीशु की शिक्षाओं के बारे में यह कहा: "उन्हें ज़्यादा पढ़ा जाता है, दुहराया जाता है, प्रेम किया जाता है, विश्वास किया जाता है और अनुवादित किया जाता है क्योंकि वह संसार में कहे जाने वाले महान्तम वचन है, उनकी महानता है निर्दोष स्पष्ट आत्मीयता, उन महान समस्याओं का स्पष्टता, सहमित और पूर्ण विश्वास, जो मानव में यीशु के शब्दों जैसा आकर्षण नहीं है क्योंकि जिस प्रकार से यीशु ने आधारभूत मानवीय प्रश्नों का उत्तर दिया उस प्रकार से कोई और मनुष्य नहीं दे सकता। वे उस प्रकार के शब्द और उत्तर हैं जिसकी अपेक्षा हम परमेश्वर से कर सकते हैं।"

क्या वास्तव में एक धोखेबाज़ या पागल ऐसी शिक्षा दे सकता है?

२) <u>उसके काम</u> - कुछ लोग कहते हैं कि मसीहत निरस है। यीशु के आस पास होने से यह नीरस नही होगी। जब वह एक पार्टी में गया उसने बहुत सारे पानी को Chataeaux Lafite में बदल दिया - ४५ ई०पू० (Chataeaux Lafite - Rothschild १८६९ की तीन बोतलों को हाल ही में सोथबी द्वारा हाँग-काँग की नीलामी में बेचा गया। एक बोतल पर सबसे ऊँचा दाम २३२,६९२ था)

उस बारे में क्या जब वह एक शोक सभा में गया? पत्थर को हटाओ। लाज़र की पट्टियाँ खोल दो। यीशु के साथ पिकनिक पर जाने के बारे में क्या जबकी जो कुछ उनके पास था वह केवल ५ रोटी और २ मछली थी?

यीशु के साथ अस्पताल जाने के विष्य में क्या जबकी वहाँ एक आदमी पडा हुआ था जो ३६ वर्षों से बीमार था। उसने उसको उठने के लिए बोला। उसने उसे पूरी रीति से चंगा किया।

उसकी मृत्यु के दिष्य में क्या - अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे देना।

३) <u>उसका चरित्:</u> बर्नार्ड लेविन ने यीशु के विष्य में लिखा:"नए नियम के शब्दों में, क्या मसीह का स्वभाव काफ़ी नहीं है किसी का प्राण बेधने में, यदि किसी में प्राण हैं जो कि बेधें जाएँ? . . . वह अब भी संसार पर छाया हुआ है, उसका संदेश अब भी स्पष्ट है, उसकी दया अब भी अपार, उसकी सांत्वना अब भी असरदार, उसके शब्द अब भी महीमा, बुद्धिमता और प्रेम से भरे हुए।"

लोर्ड हैलशाम, द लोर्ड चाँसेलर अपनी आत्मकथा 'वह द्वार जिसमें मैंने प्रवेश किया' (The Door Wherein I Went) में यीशु के चरित्र का वर्णन करते हैं कि कैसे यीशु उनके पास जीवंत रीति से आया जब वह कॉलेज में थे:

> "सर्वप्रथम हमें उसके विषय में यह जान लेना चाहिए कि उसके हमारे साथ होने से हमें मंत्रमुग्ध हो जाना चहिए। एक मानव के रूप में यीशु बेहद आकर्षक था। जो उन्होंने क्रूस पर चढाया वह एक युवा जन था, स्फ़ूर्ति और जीवन से भरा हुआ और आनन्द की बात यह है कि जीवन देनेवाला प्रभू और उससे बढकर हँसी का प्रभु, कोई जन बेहद आकर्षक कि लोग केवल मज़े के लिए उसके पीछे चले आते थे। बीसवीं सदी को चहिए कि वे फिर से महिमामय और आनन्द से भरे मनुष्य को थामकर रखें जिसकी केवल उपस्थति ही उसके साथियों को प्रसन्नता से भर देती थी। वह कोई साधारण सा गलीली नहीं था बल्कि हैम्लिन का एक सच्चा पाईड पाईपर था जिसके आस-पास बच्चे हँस्ते हुए घूम रहे होते और आनन्द और खुशी से चिल्ला रहे होते जब वह उन्हें उठाता"।

४) <u>प्रमाण का चौथा भाग है उसके द्वारा पुराने नियम की भविष्यद्वाणी का पूरा होना।</u>

थियोलॉजिकल विषयों के अमेरिकी लेखक विलबर स्मिथ ने कहा:

"भविष्य का पता लगाने के लिए प्रचीन दुनिया के पास विभिन्न तरीके थे, जिसको दिव्यता कहते हैं, लेकिन युनानी और लातीन साहित्य की पूरी क्षेणी में एक बडी एतिहासिक घटना की जो निकट भविष्य में होनेवाली है हमें कोई वास्तविक विशिष्ट भविष्यद्वाणी नहीं मिलती| हालांकि, उन्होंने भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वाणी शब्दों का प्रयोग किया| न मानव जाति में सैंकड़ों वर्ष पूर्व बोली गई भविष्यवाणीयों की ओर इस्लाम संकेत कर सकता, न ही इस देश में किसी भी धार्मिक समूह के संस्थापक उचित रीति से किसी प्रचीन लेख को निश्चित रूप से, पेहले से उनके विषय में बताते हुए पहचान सकते हैं"।

फिर भी यीशु के सन्दर्भ में उसने अपने विषय में लिखी तीन सौ साल से अधिक भविष्यवाणियाँ पूरी की जिसमें से २९ एक ही दिन में पूरी हुईं - जिस दिन वह मरा। उसमें से बहुत सी उसके द्वारा नियंत्रित नहीं की जा सकती थीं। शायद कुछ लोग कहेंगे कि वह अपने आप उन्हें पूरा करने निकला। पर आप कैसे बैतलहम में अपने जन्म का स्थान तय करते हैं? उसके जन्मस्थान के विषय में सैंकडों वर्ष पूर्व लिखा गया था। उस बारे में क्या कि वह कहाँ दफ़नाया जाएगा? उस भविष्यद्वाणी के विषय में क्या कि जब वह क्रूस पर लटका होगा तो रोमी सिपाही उसके वस्त्र के लिए चिट्ठी डालेंगे?

५) <u>प्रमाण का पाँचवा भाग है उसका पुनरुत्थान</u>

- **<u>उसका कब्र में न होना</u> - कुछ लोग कहते हैं कि मरा नहीं।** वह क्रूस पर केवल बेहोश हुआ और बाद में कब्र में जाग उठा। आइए हम उस बात में एक क्षण सोचें। पहले हमें बताया गया कि उसके शरीर से लहू और पानी आया जिसे अब हम जानते हैं थक्के और सीरम का अलग होना जो किसी भी न्यायालय में मृत्यु के लिए चिकित्सीय प्रमाण है।

31 और इसलिये कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पीलातुस से बिनती की कि उन की टांगे
तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि वह सब्त का
दिन बड़ा दिन था। 32 सो सिपाहियों ने आकर पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की भी, जो उसके
साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे। 33 परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो
उस की टांगें न तोड़ीं। 34 परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में
से तुरन्त लोहू और पानी निकला। (यूहन्ना १९: ३१-३४)

क्या हम सचमुच विश्वास कर सकते हैं कि यीशु ने उन रोमी सिपाहियों को धोखा दिया जिनके हाथों में उसका जीवन था यदि वे किसी को भाग निकलने देते? - यह तो बल्कि उनका जीवन था। उसकी पसली में भाला बेधा गया कि यदि वह अब भी जीवित है तो पता चल जाए। यीशु को कोड़े मारे गए और उसे बुरी तरह पीटा गया। उसके पास अपना क्रूस उठाने की ताकत नहीं बची थी। अपने सिर में काँटों की चोट के कारण वह खून से लथ-पथ लटका पडा था और फिर वह भाला उसकी पसली में। हाँ, हम इस बात को जानते हैं कि कुछ घंटों पहले पतरस ने आग के पास उसके हाथ गर्म किए थे इसलिए हमें पता है कि उस दिन सच में ठंड थी। क्या हम विश्वास कर सकते हैं कि उसने कब्र में ठंड की परवाह नही की, कब्र के मुहँ पर रखा बडा भारी पत्थर हटाया, संघर्ष किया और फिर सिपाहियों को घूस दी और भाग गया?

उस बारे में क्या जब पतरस और यहुन्ना कब्र पर दौड़े - उन्होंने क्या देखा जिसने उन्हें विश्वास करने पे मजबूर किया?

3 तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले। 4 और दोनों साथ साथ दौड़ रहे
थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहिले पहुंचा। 5 और झुककर कपड़े पड़े
देखे: तौभी वह भीतर न गया। 6 तब शमौन पतरस उसके पीछे पीछे पहुंचा और कब्र के भीतर
गया और कपड़े पड़े देखे। 7 और वह अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ
पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा। 8 तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर
पहिले पहुंचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया। 9 वे तो अब तक पवित्र शास्त्र की वह
बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा। (यूहन्ना २०:३-९)

कुछ लोग मानते हैं कि शिष्यों ने शव को चुराया था। आईए उस बारे में सोचें। अपने स्वामी की मृत्यु पर चेले बहुत भ्रमित थे। क्या हम सचमुच यकीन कर सकते हैं कि तीन दिन के बाद वे उन पहरेदारों के सामने से जो कब्र पर पहरा दे रहे थे शव चुराने की कोशिश करेंगे? वे ऐसा क्यों करेंगे? क्या पतरस केवल एक झूठ के लिए पेन्तकुस्त के दिन उठकर ३००० से अधिक लोगों को प्रचार कर सकता था? उनमें से बहुतों ने जिस पर विश्वास किया उसके लिए अपना जीवन दे दिया।

शायद अधिकारियों ने शव को ले लिया था? यह बहुत असंभव है क्योंकि जब चेलो ने प्रचार करना शुरू किया की यीशु मरे हुओं में से जी उठा है तो वे शव को ऐसे ही उत्पन्न कर सकते थे।

पुनरुत्थान के लिए प्रमाण का दूसरा हिस्सा उसका चेलों को दिखाई देना है - क्या वे सब भ्रम में थे? थोमा बिलकुल निश्चिंत था जब यीशु ने अपने आपको उनके सम्मुख जीवित प्रस्तुत किया। पुनरुत्थान के बाद यीशु अलग अलग चेलों को १० से अधिक बार अलग अलग जगह दिखाई दिया, फिर दूसरे अवसर पर एक ही समय में ५०० से अधिक लोगों को। (लूका २४:३६-४३) दो बार हम पढते हैं कि उसने उनके साथ भोजन किया। यदि यीशु आत्मा था तो अपने चेलों के सामने कैसे खा सकता था? (यहुन्ना २१:१२-१५, लूका २४:४१-४४)

- **शीघ्र परिणाम** - पिछ्ले २००० वर्षों में करोड़ों लोगों का बदला हुआ जीवन।

बहुत प्रचलित और ज्ञानी कार्यों के लेखक माईकल ग्रीन ने कहा: "वह कलीसिया जिसकी शुरुआत कुछ अशिक्षित मछुआरों और कर वसूलनेवालों से हुई थी अगले तीन सौ साल में

पूरे ज्ञात संसार में फैल गई। यह शान्तिपूर्ण क्राति की बिल्कुल सिद्ध अद्भुत कहानी है जिसकी संसार के इतिहास में कोई समानता नहीं है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पूछनेवालों से मसीही लोग यह कह पाए, "यीशु तुम्हारे लिए केवल मरा ही नही, वह जीवित है! तुम उससे मिल सकते हो और जिस सच्चाई के विषय में हम बात कर रहें हैं उसका अपने आप पता लगा सकते हो।" उन्होंने किया और कलीसिया से जुड़े और वह कलीसिया जो उस ईसटर की कब्र से उत्पन्न हुई हर जगह फैल गई।

__मसीही अनुभव__

सी.एस.लूईस इसका निष्कर्ष इस प्रकार देते हैं:

> "फिर हमारा सामना एक भयभीत करनेवाले उपाय से है। जिस मनुष्य के बारे में हम बात कर रहे हैं, जैसा उसने कहा था वह था (और है) या फिर एक सिरफिरा या कुछ उससे भी बदतर। अब मुझे बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देता है कि न तो वह सिरफरा था न ही दुष्ट जन और परिणामस्वरूप चाहे यह कितना अजीब, डरावना या असंभव क्यों न लगे मुझे इस नज़रिये को अपनाना है कि वह परमेश्वर था और है। परमेश्वर ने शत्रु द्वारा कब्ज़ाए संसार में मानव रूप में कदम रखा है"।

क्या अभी तक आपको विश्वास हुआ? शायद यह आप का समय है इस बारे में कुछ करने का। जिस परमेश्वर की बात हम कर रहे है वह आपके विषय में सब कुछ जानता है और अनन्न्त प्रेम से प्यार करता है। (यिर्मयाह ३१:३) उसने समान्य से हटकर कार्य किया - अपने पुत्र प्रभु यीशु के रूप में आया उन पापों का दाम चुकाने के लिए जिसके लायक आप और मैं थे, पृथ्वी पर अपने पापी जीवन के कारण। बाईबिल बताती है कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह बचाया जाएगा। (रोमियों १०:१३) यदि आप सच्चाई से उस ईश्वर की ओर मुड़ेंगें जिसने आपको रचा, पापों से फिरेंगे और अपने पापों की क्षमा के लिए प्रभु यीशु मसीह को आमांत्रित करेंगे, तो बाईबिल कहती है कि आप बचाए जाएँगे। वर्तमान समय से बेहतर और कोई समय नहीं है।

शायद आप यह प्रार्थना करना चाहेंगे:

पिता, आज मैं दीनता में आपके पास आता हूँ उस महान प्रेम को जानते हुए जो प्रभु यीशु मसीह को दुनिया में लेकर आया कि मेरे बदले पाप का दाम चुकाए। हांलाकि जो मृत्यु उसने सही वह उसके योग्य नहीं था, मैं जानता हूँ कि वह उसने मेरे लिए किया। मेरा स्थान लेकर मेरे बदले क्रूस पर मरा। मैं अपने पापी जीवन से फिरकर तेरे पास आता हूँ। मेरे पाप क्षमा कर और

मेरे जीवन में आ। मैं इसी क्षण से तेरे लिए जीना चाहता हूँ। मसीह में जीवन का जो मुफ़्त दान तू मुझे देता है, उसके लिए मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ। आमीन!

मैं आपको उत्साहित करना चाहुँगा कि, इसके बाद आनेवाले अध्ययन को भी पढें जिसका नाम है, 'यीशु क्यों मरा?'
इस अध्ययन के बहुत सारे विचार निक्की गमबेल द्वारा ऐल्फ़ा कोर्स से हैं।

मैं किंग्सवे पब्लिशर द्वारा छपी उनकी पुस्तक "Questions of Life" (जीवन के प्रश्न) को भी पढने का सुझाव देना चाहूँगा।

Adapted by Keith Thomas
Email: keiththomas7@gmail.com
Website: www.groupbiblestudy.com